वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

नवम्बर – 2015

* भगवान देवआत्मा फरमाते हैं।
* अनाधिकारी आत्मा
* उपकारी जगत
* उच्च भावों की विशेषता और बरकतें
* इतिहास का महत्व
* जीवन प्रसंग
* आरम्भिक दिन
* सत्य धर्म बोध उत्सव

भगवान देवआत्मा फरमाते है।

मई सन् 1918 ई०

तुम में से हर एक अपने अपने दिल में यह प्रश्न करके देखे कि जहां तक लक्ष्य का संबंध हैं, मुझे में और अन्य जनों में क्या अन्तर है? आया तुम इस बात के लिए ही नहीं जीते कि मुझे सुख मिले? क्या तुम सुख के लिए ही दिन रात भागे दौड़े फिरते हो? जैसे पशुओं को एक चीज़ कड़वी बोध होती है और एक मीठी, तब वह मीठी को पसंद करते हैं और कड़वी को नापसंद, ठीक उसी प्रकार से ही तुम्हें भी जो कुछ सुखकर बोध होता है, जिसमें तृप्ति बोध होती है, तुम उस के अनुसार ही चलना चाहते हो। फिर धर्म समाज के क्या मायने? इसका नाम सुख समाज की क्यों न रख दें? आया तुम धर्म समाज में भी नीच सुख पाने के लिए ही आए हो? जहां तक लक्ष्य का सम्बन्ध है, तुम में और अन्य जनों में क्या अन्तर है? तुम में से कोई यह कह सकते हैं कि हम भलाई का काम करते हैं। आया भला काम और कहीं नहीं हो रहा? प्रश्न यह है कि तुम्हारा लक्ष्य क्या है? तुम धर्म समाज में काहे के लिए आए हो? तुम में और औरों में क्या अन्तर है? फर्ज़ करो कि वह पाप करते हैं और तुम नहीं करते, परन्तु तुम और वह जीते काहे के लिए हो। कोई भला काम तुम कर देते हो, कोई भला काम वह कर देते हैं। मेरी यह आकांक्षा है कि कुछ देव समाजी अवश्य ऐसे पैदा हों, जो यह कहें कि महाराज! हम नीच सुख के लिए नहीं जीते, हम आत्मिक शुभ के लिए जीते हैं, हमारे और दूसरों के लक्ष्य में अन्तर है। हमने इन नीच शक्तियों से मोक्ष लाभ की है और आगे करेंगे। मैं बेशक उन जनों की प्रशंसा करता हूं, जो कुछ भी भलाई का काम करते हैं। क्यों कोई प्रतिदिन औरों का काम करे, क्यों कोई किसी की दवाई लावे, क्यों सफाई करे? जो हस्पताल खोलता है, भूखों को खाना देता है, और जो गर्मी में प्यासों को पानी पिलाता है, जिस ने कोई स्कूल मुफ़्त खोल दिया है आदि आदि वह बेशक प्रशंसा के योग्य हैं, परन्तु मैं इस शरीर और दिमाग़ से आगे आत्माओं को बेहतर करने का काम करता हूँ। तुम्हें यह बोध करने की नितान्त आवश्यकता है कि हम आत्माहिताकांक्षी कर और भगवान देवात्मा के साथ जुड़ कर अपने आत्मा में शुभ परिवर्तन लाभ करते हैं, अर्थात् आत्मा के संबंध में आत्म अंधकार और मिथ्या विश्वासों से निकलते हैं, आत्मा के प्रकृत रूप को देखने के योग्य बनते हैं और एक या दूसरे पाप से उद्धार लाभ करते हैं और अपने भीतर एक या दूसरा उच्च भाव विकसित करते हैं। यह काम और कहीं भी नहीं हो रहा। तुम बताओ, ऐसा काम और कहां हो रहा है? यदि तुम्हारा यह लक्ष्य हो, तब तुम्हारी विशेषता है और तब तु म्हारा सम्बन्ध देवात्मा के साथ हो सकता है। क्या तुम दिखा सकते हो कि तुम नीच सुख अनुरागी नहीं, आत्महिताकांक्षी हो? शुभ के आने से जितना सुख आता है, वह सुख हम चाहते हैं, बाकी को नहीं चाहते। जब तक तुम्हारा यह लक्ष्य न हो कि आत्महिताकांक्षी होकर जीवन दाता भगवान देवात्मा के शिष्य हों, तब तक तुम्हारी आत्मिक भलाई का मार्ग भली भान्ति खुल नहीं सकता।

धर्म जीवन

खण्ड 28 अंक 11

सम्पादक डा. विनोद खेड़ा | नवम्बर – 2015 | वार्षिक मूल्य 50 रूपये | सह सम्पादिका सुरजीत बराड़

अनाधिकारी आत्मा

नेचर या विश्व में इसके अपने ही विशेष नियम काम करते हैं। और महान नियमों की तरह नेचर में निर्भरता का ठोस नियम काम करता है। नेचर में कोई अस्तित्व, पौधे, पशु, मनुष्य अपने आप में सक्षम नहीं। अपने आप में पूर्ण नहीं। कोई अस्तित्व Self sufficient नहीं। नेचर ने अपने आप को छोड़कर, और कोई वजूद स्वैपूर्ण नही बनाया। सब में अधूरापन है। वह और अस्तित्वों पर निर्भर करते हैं। हर अस्तित्व अपनी उत्पत्ति के लिए पानी, हवा, रोशनी, गर्माहट आदि के लिए दूसरों के मोहताज हैं। यह निर्भरता आवश्यक है।

नेचर ने अपने विकास क्रम अनुसार जैसे पशुओं के जगत से मनुष्य की हस्ती को प्रगट किया है उसी प्रकार उसने मनुष्य जगत में से बिल्कुल अनोखी शक्तियों वा योग्यताएं देकर मनुष्य श्रेणी के शिरोमणी देवात्मा को प्रगट किया है। देव आत्मा के भीतर पूर्ण मनुष्य जगत से भिन्न योग्यताएं वा क्षमताएं या शक्तियों को अर्थात शुभ और हित या विकास के पूर्ण अनुरागों और झूठ, गप्प, मिथ्या, वहिमों, कल्पनाओं वा भ्रम भुलेखों की शत्रुता के साथ श्रृंगार कर प्रगट किया है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा में अपनी उक्त मनुष्य जगत से पूर्णता भिन्न शक्तियों के विकास के साथ निराली, महा वचित्र रोशनी और तेज को विकसित किया है, उन्हें देव ज्योति और देव तेज से सम्पन्न किया है। इस उक्त देव ज्योति और देव तेज को, देव धर्म की भाषा के भीतर देव प्रभावों के नाम से जाना जाता है।

मनुष्य केवल शरीर नहीं, वह रूह वा आत्मा भी है। मनुष्य केवल अपने आपको शरीर के रूप में ही जानता है। वह उसके सुख दुख को लेकर जीता है। मनुष्य हस्ती का मूल आधार, उसकी जीवनी शक्ति या आत्मा है। मनुष्य हस्ती का अस्तित्व, उत्पत्ति, स्थिति, जीना मरना, सुखी, दुखी होना, स्वस्थ्य, रोगी होना, अमीर वा गरीब होना, मान अपमान को प्राप्त करना, मनुष्य का अच्छा वा बुरा होना, सन्त या शैतान होना, सब कुछ उसके आत्मिक जीवन के साथ सम्बन्धित है, परन्तु मनुष्य अकसर इस सचाई से पूर्ण अनजान हैं और खाली है। Soul Culture या Self Culture के बिना मनुष्य का अन्धेरे में भटकना, दुख हानियां और नाश को प्राप्त होना लाज़मी और जरूरी है।

जैसे नेचर जननी ने मनुष्य के शरीर की जिन्दगी को भौतिक सूरज के हवा पानी और खुराक आदि पर निर्भर रखा है। वैसे नेचर ने मनुष्य आत्मा के सच्चे ज्ञान को, आत्मा की बनावट, आत्मा के रोगों,

आत्मा के पतन और कुशल, आत्मा के नाश और विकास को, आत्मा के मरने वा जीने को, अध्यात्मिक सूरज देवात्मा के देव प्रभावों पर पूर्ण निर्भर रखा है। देव प्रभावों के बिना आत्म कल्याण सम्भव नहीं। यह सब कुछ देव प्रभावों की निरन्तर प्राप्त होने पर ही निर्भर है।

देव प्रभावों के सम्बन्ध में स्वयं परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने फरमाया है। "देव प्रभावो को प्राप्त होकर मनुष्य आत्मा के भीतर परिवर्तन की उत्पत्ति होती हो, न चाहकर भी वह एक या दूसरे प्रकार का उच्च परिवर्तन प्राप्त करता हो, किसी नीच गति से मुक्ति पाता हो और किसी उच्च गति को ग्रहण करने के योग्य बनता हो, वह देव प्रभाव मनुष्य जगत के भीतर कैसे विलक्षण! और यह देव प्रभाव जिन देव शक्तियों से निकल कर किसी आत्मा तक पहुंचते हों वह देव शक्तियां कितनी अद्वितीय!! और यह देव शक्तियां जिस आत्मा के भीतर विकसित हुई हैं, वह देवआत्मा कितने अलौकिक!!! मेरे इन देव प्रभावों को प्राप्त करके ही कोई आत्मा सत्य धर्म का अधिक से अधिक बोधी हो सकता है, बिना उनके कभी भी नहीं। याद रखो कि तुम में से जिस जिसको सच्चे धर्म और अधर्म के सम्बन्ध में थोड़ा बहुत ज्ञान हुआ है, वह मेरे देव प्रभावों द्वारा हुआ है और तुम्हारा यह ज्ञान केवल मेरे देव प्रभावों द्वारा ही तुम्हारे भीतर रह सकता है, बिना इसके कभी नहीं। तुम मेरे देव प्रभावों से कटकर सत्य धर्म या जीवन तत्व सम्बन्धी महा दुर्लभ ज्ञान के कभी भी अधिकारी नहीं रह सकते। भौतिक ज्योति से कटकर तुम्हारा अन्धकार में वास करना और अन्धता में ग्रस्त हो जाना प्रकृति के अटल नियम के अनुसार अनिवार्य है। जो जन देव समाज से कटकर या देव समाज के भीतर रहकर मेरी देव ज्योति की कुछ भी किरणों को अपने हृदय के अन्दर प्राप्त करने के कुछ भी अधिकारी नहीं रहे या नहीं बने, उनकी हालत प्रकृति के इस नियम की अटलता का साक्षात प्रमाण है।

पूजनीय भगवान का यह भी अद्वितीय फरमान है :- उक्त देव प्रभावों की प्राप्ति के बिना मनुष्य प्रकृत रूप में यह देखने समझने के योग्य ही नहीं होता कि मै केवल शरीर ही नहीं, मैं जीवनी शक्ति या आत्मा भी हूं। मनुष्य को, देव प्रभावों की प्राप्ति के बिना यह आवश्यक सोझी ही प्राप्त नहीं हो सकती कि मेरे अस्तित्व में असल, सत्य, मूल और कीमती हस्ती मेरी जीवनी शक्ति या आत्मा है।

देव प्रभावों के बिना मनुष्य को अपनी परिचालक शक्तियों का उज्जवल रूप में ज्ञान नहीं होता, अपनी सोच, ख्याल और गतियां, मेरा हित कर रही हैं या मेरी वा दूसरों की हानि कर रही हैं कोई अता पता नहीं लगता। जीवन की सारी प्राप्तियों में अपने आपको जानना, अपने आत्मा को समझना, अपने आत्मा को बचाना, अपने आत्मा को नीच से उच्च बनाना ही वास्तव में सबसे मुख्य और जरूरी प्राप्ति है, यह सचाई भी देव प्रभावों के बिना दिखाई नहीं दे सकती। नीच जीवन मिटाने, नीच शक्तियों से स्वयं मुक्त होना अति दुर्लभ इच्छा भी देव प्रभावों के बिना पैदा नहीं हो सकती। गुरू के देव प्रभावों के सूरज के सत्य दर्शन तक नहीं हो सकते। उनके साथ सच्चे सम्बन्ध की प्राप्ति की कोई आवश्यकता, और महिमा, बिल्कुल ही महसूस नहीं हो सकती। देव प्रभावों की प्राप्ति यथेष्ट मात्रा की प्राप्ति के बिना, मनुष्य की Self culture की, अपने आत्मा के ज्ञान और आत्म कल्याण की सारी निर्भरता, नेचर ने उसी प्रकार प्रभावों पर निर्भर रखा है, जैसे शारीरिक जीवन की सारी निर्भरता हवा, पानी और खुराक पर है।

अपने सच्चे भले के इच्छुक के लिए देव

प्रभाव अमूल्य और अनिवार्य पदार्थ हैं। इन तक रसाई ही मनुष्य जीवन का सत्य मुख्य लक्ष्य है। अब प्रश्न यह है, कौन देव प्रभावों तक पहुंचने के योग्य हो सकता है कौन इनकी प्राप्ति का सच्चा अधिकारी हो सकता है।

सबसे बड़ा अवरोधक, बाधा वा अड़चन देव प्रभावों की प्राप्ति में मनुष्य के अपने अहं–जात भाव अर्थात घमंड घृणा आदि के नीच अनुराग हैं। इन भयानक नीच अनुरागों की हृदय में प्रबलता रखकर कोई भी मनुष्य अद्वितीय देव प्रभावों की प्राप्ति के अधिकारी होने के महा सौभाग्य को नहीं पा सकता। परम पूजनीय भगवान ने स्वयं देव प्रभावों के अधिकारी होने के ठोस चिन्ह फरमाए हैं। उनको बार 2 प्रार्थना पूर्वक पढ़ते रहने की हर अपने सच्चे हित के चाहवान को आवश्यकता है। वह इस प्रकार है : –

1) जिन मनुष्य आत्माओं के भीतर उनका महा पतनकारी अहं अनुराग इतना अधिक हो कि जिसके कारण वह अपनी प्रशंसा के अतिरिक्त (चाहे वह कितनी भी झूठी क्यों न हो) किसी और की सच्ची प्रशंसा को भी सुनकर कष्ट बोध करते हों, जिन जनों को अपने भिन्न किसी और की प्रशंसा सुनकर छुरीयां लगती हों।

2) "जो अपने किसी मिथ्या विश्वास या मत या अपनी किसी बुराई या अपने किसी पाप या अपराध या अपनी किसी हीनता के इतने पक्षपाती बन चुके हों, कि उसके विरूद्ध किसी से कुछ जानने या सुनने के लिए तैयार न हों" जो मैं ही ठीक हूं।" के लोक के वासी हों और अपने विरूद्ध सुनने वा सोचने के योग्य न हों।

3) "और उक्त बातों में किसी के विरूद्ध किसी से कुछ सुनकर उसके प्रति इतनी घृणा भाव से भर जाते हों कि उसके कारण वह उसको अपना शुत्रु के रूप में देखते हों। जो अपने विरूद्ध थोड़ा सा भी सुनकर झट आग बबूला हो जाते हों और कहने वाले को अपना शत्रु देखते हों।

4) "और अपने सम्बन्ध में घटीया दिखाने वाली उसकी किसी सच्ची बात को ही झूठी बताते हों।"

5) और उस (बताने वाले) में कोई सच्चा गुण भी हो, उसको इस घृणा भाव के कारण वह न देखते हों और न स्वीकार करते हों।

6) "जो अपनी ऐसी अधम प्रकृति के कारण एक या दूसरे मनुष्य में उसके किसी इस या उस सच्चे या झूठे दोष या अपराध या पाप या उसकी किसी इस उस सच्ची या झूठी हीनता (कमी) के देखने और उस विषय में किसी से कुछ सुनने के सदा लालसी रहते हों।

7) और उस (हीनता) को देखकर या सुनकर या उसका वर्णन करके अपने नीच घमंड की तृप्ति पाकर सुखी और प्रफुल्लत होते हों।

8) और उनको अपनी कोई भी सच्ची नीचता, या हीनता, कभी दिखाई न देती हो।

9) "और वह अपने किसी हित–अकांक्षी की ओर से अपने या किसी ऐसे जन आदि के सम्बन्ध में कि जिस के साथ वह किसी नीच अनुराग के साथ बन्धे हुए होने के कारण, किसी सच्चे नीच या बुरे कर्म या दोष या अपराध या किसी हीनता के विषय में किसी बात को आप सुनकर या किसी और की तरफ से जानकर या पढ़कर उससे इतनी ठेस (आघात) या कष्ट पाते हों कि उसके साथ अपने घृणाभाव के भड़क उठने पर उसे उल्ट रूप में देखते हों।

10) "जो अपने आत्मा के वजूद, उसके भिन्न भिन्न प्रकार की पतनकारी घृणाओं और उनके द्वारा अपने हर दिन के आत्मिक पतन, इस पतन से मोक्ष की

आवश्यकता और उसकी विधि सम्बन्धी सच्चे बोधों से पूर्ण रूप से वंचित होकर अपने ही भिन्न प्रकार के मिथ्या विश्वासों या मतों पर पक्के रहने में अपना बड़प्पन या बढ़ियापन महसूस करते हों

11) "और वह उन सब विषयों के सम्बन्ध में किसी सच्चे शिक्षक या गुरू से ज्योति पाने के लिए अपने भीतर कोई आवश्यकता या अकांक्षा महसूस न करते हों।"

12) "और अपने आप को ही अपना शिक्षक या गुरू मानते हों।"

13) "और वह अपनी इस महा शोचनीय अवस्था को महा शोचनीय रूप में देखने के स्थान पर बहुत सुन्दर और सराहने योग्य रूप में दखते हों"

14) "और इससे भी बढ़कर देवात्मा को अपनी इस अधम प्रकृति के विरूद्ध पाकर उसे अपने से घटीया और उसके प्रति अपने भीतर स्वभाविक घृणा बोध करते हों।"

15) "जो अपने पतनकारी नीच अनुरागों और अपने पतनकारी नीच घृणाओं से भिन्न भिन्न सुखों को पाकर और उन्हें अपना सुख दाता महसूस करके, उनकी तृप्ति के साधन में ही अपना सच्चा भला जानते और अनुभव करते हों।"

16) "वह देवात्मा के देव प्रभावों के पाने के अधिकारी नहीं। इसलिए ऐसे पूर्ण अनाधिकारी आत्माओं में न तो देवात्मा के देव प्रभाव प्रवेश कर सकते हैं, और न ही उनके भीतर किसी प्रकार का शुभ परिवर्तन ही पैदा कर सकते हैं।

–बलदेव सिंह

उपकारी जगत

इस नारकीय संसार में परम पूजनीय भगवान देवात्मा की शरण का मिलना हमारा महा सौभाग्य है, बेशक वह हमें जो कुछ बनाना चाहते हैं, उससे हम कोसों दूर हैं। हम मनुष्यात्मा हैं, सुखों के अनुरागी हैं, हमारे सुख अनुराग हमें अपने शुभ से गाफ़िल करते हैं, परन्तु फिर भी पूजनीय भगवान की शरण को पाकर जो हम मोटे पापों से बच गए, मिथ्या से बच गए, यह उपकार हम तुच्छ आत्माओं पर महा उपकार है। मैं तो कई बार सोचती हूं कि स्त्री होने के नाते शायद बड़े–2 पापों से तो कुछ न कुछ बचे भी रहते, परन्तु मिथ्या के मायाजाल से निकल पाना तो असम्भव था। अब जब सुसभ्य कहलाने वाले, बड़े 2 विद्वान, कलाकर मिथ्या के अन्धेरे में भटक रहे हैं, तो हमारी क्या बिसात थी।

इन दिनों में मुझे एक और महा उपकार पूजनीय भगवान का नज़र आता रहता है कि उन्होंने हमें चारों जगतों के दर्शन करा दिए। हम सब जगतों से उपकार पाकर उनके साथ सम्बन्ध को मान्सिक रूप से भी कभी नहीं समझ सकते थे। चारों जगतों के सम्बन्ध में मैं विचार करती रहती हूं, तो अपना आप कहीं नज़र नहीं आता। मेरी हस्ती भौतिक जगत, वनस्पति जगत, पशु जगत और मनुष्य जगत पर निर्भर है, इन एक के बिना भी मेरी हस्ती का कोई नामो – निशान नहीं दिखता।

पहले मैं भौतिक जगत के सम्बन्ध में ही सोचती हूं कि यह धरती, सूरज, वायु, पानी, कल्पना करो कि इनमें से एक भी अपनी सेवा का हाथ खींच ले,

तो हमारी हस्ती समाप्त हो जाएगी। परन्तु हमारा ध्यान इधर कभी नहीं जाता, यदि पूजनीय भगवान की शिक्षा न मिलती। हम इन जगतों के देनदार हैं, इनकी कृपा से जीवित हैं। यह सब (पानी के बिना) हमें मुफ्त मिल रहे हैं। पूजनीय भगवान ने इनके उपकारों को अनुभव करना सिखाया है। सुबह बिस्तरे से उठते ही धरती पर पांव रखते हमें उसे धन्यवाद देना चाहिए, वह पैरों तले है तो हम खड़े हो सकते हैं, इसीलिए इसे धरती मां कहा जाता है, जैसे बच्चा अपनी मां की गोद में सुरक्षित है, वैसे ही हम धरती पर सुरक्षित हैं, भुचाल आ जाते हैं, धरती हिल जाती है, तो जिनके पैर धरती पर नहीं टिकते, वह अपने प्राण गंवा देते हैं, तो हमारा धरती, सूरज, हवा और पानी जो हमारे प्राणाधार हैं, उन्हें शत: शत: नमस्कार है, उनको साफ रखना और धन्यवाद देना और हर रोज़ उनकी कृपा को याद करना हमें दीन बनाता है।

भौतिक जगत की वस्तुओं को लें तो उनका कोई शुमार नहीं, जिनके साथ हमारा जीवन सुविधा जनक बनता है। अपने घर में अपनी चारपाईयां बिस्तरे, फर्नीचर, पंखे, किचन का सामान, एक एक वस्तु का हमारे जीवन में क्या महत्व है, अगर उस पर विचार करें, तो हम अवश्य उनके उपकारी रूप के आगे झुकेंगे। मुझे तो अनेकों बार विशेष कर सर्दियों में जब ठण्ड पड़ रहीं होती है, और हम गद्धे, रजाई में आराम से पड़े होते है, तो वह इतने उपकारी नज़र आते हैं, उनको प्रणाम करती हूँ, और साथ ही वह लोग सामने आ जाते हैं, जिनके ऊपर छत नहीं, सोने के लिए ज़रूरी कपड़े नहीं फिर नेचर को लाख लाख धन्यवाद देती हूँ कि यह चीजें कहने के लिए बेजान हैं परन्तु मेरे जीवन को किस प्रकार सुरक्षित रखती हैं, इसका अनुमान हम सब को है।

बिजली, पंखे, गैस कूलर, A.C., बेजान होकर भी मनुष्यों में जान फूंकते हैं, ज़िदगी को सुविधा जनक बनाते हैं। अगर हम सवारियों की ओर ध्यान ले जाएं तो, छकड़ों, टांगों, साईकल, बस, कारें, हवाई जहाज सब निर्जीव जगत के पदार्थ हैं। जैसे जैसे इन्सान का दिमाग रोशन होता गया, आने जाने के साधनों में यह सुविधा भी बढ़ती गई। जो समान राजों, महाराजों को उपलब्ध नहीं थे, आज निर्जीव कहलाने वाली चीजों ने आम मनुष्य की जिन्दगी सुविधा जनक बना दी है। चारों ओर निग़ाह ले जाएं, हम निर्जीव चीजों से घिरे हुए हैं, परन्तु वह हमारी अन्धी आंखों को नज़र नहीं आती। बसें, कारें, जला दी जाती हैं, मनुष्य की हिंसक प्रकृति जीव जन्तुओं को तो हानि पहुंचाती है, निर्जीव वस्तुओं को भी नहीं छोड़ती।

हम विद्वान बन जाते है, पढ़े लिखे कहलाते हैं, परन्तु कभी नहीं ध्यान जाता कि वह स्कूल कालिज की बिल्डिगें हमारी कितनी उपकारी है। किताबें निर्जीव हैं, परन्तु उनमें ज्ञान का समुन्द्र भरा हुआ है, उनके द्वारा हमें ज्ञान प्राप्त होता है। परन्तु अक्सर बच्चे उनकी हालत ख़राब रखते हैं और परीक्षा के बाद तो कई बुरी तरह फैंकते हैं कि इन्होंने हमारी जान खा ली। मनुष्य प्रकृति महा स्वार्थी है। सेवा पाकर भूल जाना, उल्टा सेवाकरी के साथ दुर्व्वहार करने में कोई झिझक नहीं होती, न यह नैतिक मुल्य डालने की किसी को आवश्यकता नज़र आती है, इसीलिए हमारी किताबें गन्दी, अल्मारियां गन्दी, उन पर धूल चढ़ी रहती है। यदि यह बेजान वस्तुएं उपकारी नज़र आएं, तो हम उनके आगे झुकें और उनको कभी हानि न पहुंचाएं। यह परम पूजनीय भगवान की रोशनी में श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी ने एक सुन्दर मिसाल कायम की है, कि लालटैन की चिमनी टूटने पर कितना परिशोध किया,

कितना दुखी हुए कि मैंने एक बेजान चीज की जिन्दगी को वक्त से पहले ख़त्म कर दिया। हमारी लापरवाही से चीजें खराब होती हैं, टूटती हैं, परन्तु ज़रा भर भी दुख नहीं होता।

आगे कपड़ों की दुनियां है, जिन्हें पहनकर हम अकड़ कर चलते हैं, वह हमें सर्दी गर्मी से ही नहीं बचाते, बल्कि हमारे व्यक्तिव को निख़ारते हैं, हमें सुन्दरता प्रदान करते हैं, पहनने के समय उनके लिए भी धन्यवाद की भावना पैदा होनी चाहिए, परन्तु धन्यवाद तो दूर की बात, जितना सुन्दर कपड़ा, उतना ही पहनने वाला ज़्यादा अकड़ता है, जिसने उसकी सुन्दरता बढ़ाई, उसकी ओर ध्यान नहीं जाता।

इस प्रकार लिखते जाएं तो यह जगत इतना विशाल है कि उसकी गिणती कठिन है। आजकल दिवाली के दिन हैं, लोग घरों को साफ करते हैं, पर पूजनीय भगवान तो चाहते हैं कि हम सदा ही दिवाली की तरह इस बेजान जगत को साफ सुथरा, तरतीब में रखें। अपने घर की एक एक चीज़ की ओर ध्यान ले जाएं कि कहां निर्जीव जगत को गन्दा करके हम उसके उपकारी रूप को तो क्या देखना था उसके सम्बन्ध में अन्यायकारी बनते हैं। परम पूजनीय भगवान की शरण पाकर एक एक ग्रामीण, पशुओं के तबेले में सोने वाले को इतना सफाई पसन्द बना दिया कि भौतिक जगत की थोड़ी ही हानि भी उसे सहन नहीं होती थी। परम पूजनीय भगवान सब जगतों के साथ अटूट सम्बन्ध रखते थे, किसी जगत की छोटी सी हानि पर भी वह गहरा सदमा अनुभव करते थे। उनके शिष्य होकर हम इन भौतिक जगत के दिनों में इस सत्य को अनुभव करें कि पूरा वर्ष ही हमने अपनी बेजान वस्तुओं को साफ सुथरा रखना है। देव समाजी का घर दूसरों से अलग दिखना चाहिए ताकि और लोग उससे प्रेरणा लें।

एक और महत्वपूर्ण बात यह है कि इन भौतिक पदार्थों से मोह बन्धन से भी ऊपर होना है। जो चीजें घर में फालतू हैं, उन्हें औरों को दें। घर को कबाड़ न बनाएं, कई चीजें घरों में पड़ी रहती हैं जो सालों प्रयोग में नहीं आती, वह किसी ज़रूरत मन्द को देकर अपने घर को कबाड़ बनने से बचाएं। ऐसे उपकारी जगत को नमन करें, धन्यवाद दें और उसके साथ अपने अटूट रिश्ते को अनुभव करें।

सुरजीत बराड़

उच्च भावों की विशेषता और बरकतें

साधारण मनुष्यों को छोड़कर बड़े–बड़े विद्वान भी कई सत्यों से अन्धे हैं। वह यह नहीं जानते, कि जीवन के उच्च सत्य व तत्व दिमाग के द्वारा नजर नहीं आते। जिन उच्च भावों के साथ जिन उच्च सच्चाईयों का सम्बन्ध हो, उन सच्चाईयों का सत्य ज्ञान उन्हीं उच्च भावों के द्वारा होगा। एक बहुत बड़े विद्वान और योग्य मनुष्य हमेशा ही यह कहते हुए सुने जाते थे कि कोई मनुष्य ऐसा नहीं, कि जो धन को मुख्य लक्ष्य बनाकर जीवन की यात्रा न करता हो। जब उनको बताया जाता था, कि देखो एक जन ने अपना सब कुछ दूसरों की सेवा के लिए त्याग किया है, और वह वर्षों से त्याग की जिन्दगी व्यतीत कर रहे हैं। तब वह यही कहते थे, कि ऐसे जन का धन कमाना ही अवश्य लक्ष्य होगा। उन के सामने डाक्टर ऐनीबेसेंट का वर्णन किया गया, कि वह प्रति वर्ष नियत दिन पर अपना सब कुछ दूसरों की सेवा के लिए त्याग देती थी, तो भी वह भद्र

जन यही कहते थे, कि उन का भी अवश्य धन लाभ करना ही मुख्य लक्ष्य होगा। यह भद्र जन खुद धन के लालची थे और पूर्ण स्वार्थी थे। इसलिए उनके सामने परोपकार की कोई तस्वीर नहीं बनती थी। परोपकार की तस्वीर परोपकारी जन के सन्मुख स्पष्ट रूप से प्रगट होती है। जिस भाव के द्वारा कोई चिन्ता वा क्रिया प्रकाश पाती है, उसी भाव की रोशनी में ही उस भाव सम्बन्धी चिन्ताओं और क्रियाओं का साक्षात् ज्ञान हो सकता है। इसके भिन्न लाखों और करोड़ों नीच जीवन धारियों को यह प्रतीत नहीं होता, कि जो उलझनें नीच जीवन के कारण उत्पन्न होती हैं, वह नीच जीवन के द्वारा हल न होंगी। साधारण जन जब अपने नीच जीवन के कारण दुखी होते हैं, तब वह नीच जीवन के दुखों से निकलने के लिए अजीब हल सोचते और काम में लाते हैं। हजारों और लाखों जन इसलिए शराब और अन्य नशों का सेवन करते हैं, कि वह इन नशों के द्वारा अपना गम गलत कर लेंगे। वह मूर्ख समझते हैं, कि गम की ओर से थोड़ी देर के लिए ध्यान फेरने से गम चला जाएगा। परन्तु ज्यों ही नशा उतर जाता है, त्यों ही उन का दुख फिर नए सिरे से अपना सिर उठाता है। वह बेसुधि में दुख से छुटकारा पाने की कोशिश करते हैं। दुख के कारण को नहीं ढूंढते और उसे मिटाना नहीं चाहते बल्कि दुख से भागना चाहते हैं। कहलाने वाले हजारों व लाखों साधुओं और संतों ने दुख से छुटकारा इस बात में समझा, कि दुनियां को ही छोड़ दें, और पहाड़ों और जंगलों में जाकर जीवन व्यतीत करें, चंद शरीफों को छोड़कर ऐसे जन कई नीच भावों से छुटकारा नहीं पा सके। और इसलिए एक ओर अपने जीवन के विचार से दिनों दिन अधिक नीच बनते गए, और दूसरी ओर वह नीच चिन्ताओं में इतने जलते और कुढ़ते रहे, कि जिनकी कोई हद नहीं। नीच जीवन से छुटकारा दुनियां से भाग जाने से नहीं होता। नीच जीवन के दुखों से तब छुटकारा होगा, कि जब मनुष्य नीच जीवन से सत्य मोक्ष प्राप्त करे। ईर्ष्या की आग में जलता हुआ जन शराब पीने से उस आत्मिक रोग या ईर्ष्या से छुटकारा नहीं पाएगा। जंगलों और पहाड़ों में भाग जाने से मनुष्य ईर्ष्या से छुटकारा नहीं पा सकता। ईर्ष्या की आग से बचने के लिए ईर्ष्या के भाव से मोक्ष पाना आवश्यक है। आज कल हजारों जन अपने गम को सिनेमा के द्वारा गलत करना चाहते हैं एक जन ने मुझे बताया कि वह बहुत दुखी रहते हैं, परिवारिक जीवन उनके लिए जहंन्नुम साबित हो रहा है। उनके लिए जीवन बहुत दुखमय बना हुआ है। वह प्रति दिन सिनेमा जाने का अवसर लाभ न करें, तो उनका हृदय शान्ति नहीं पाता। अब नीच जीवन धारियों को यह सच्चाई नजर नहीं आती, कि उनके 99 फीसदी दुखों का कारण उनके नीच सुख अनुराग हैं। इसलिए जब तक नीच सुख अनुराग उनके हृदयों के मालिक रहेंगे, तब तक नशों के पीने या जंगलों में भागने या सिनेमा में जाने या उनके प्रति दिन के पूजा पाठ करने से काम नहीं चलेगा। कई मूर्ख जन गीता के पाठ में लग जाते हैं। कई जन एक या दूसरी इलहामी पुस्तक के पाठ में लग जाते हैं। यह सब तरीके बेसूद हैं। भगवान देवात्मा ने यह तत्व प्रगट किया है, कि मनुष्य की कुल चिन्ताओं और क्रियाओं के कराने वाले भाव ही होते हैं। और यह भाव शक्तियां दो प्रकार की हैं। नीच सुख अनुराग और नीच घृणाएं और उच्च सुख अनुराग और उच्च घृणाएं। नीच सुख अनुराग और नीच घृणाएं सब पापों, जुर्मो और गुनाहों का मूल कारण हैं और महा भयानक मोह बन्धन उत्पन्न करते हैं, जिनके भयानक फलों के कारण मनुष्य असह्य और अनगिणत दुख पाते हैं, और इस कदर अनमेल की आग भड़काते हैं, कि जिस का कोई ठिकाना नहीं। इस कुल जहंन्नुम से छुटकारा पाने का हल भगवान् देवात्मा ने यह फरमाया

है, कि मनुष्य नीच सुख अनुरागों और नीच घृणाओं से सत्य मोक्ष प्राप्त करें। और ऐसी सत्य मोक्ष सिवाय भगवान् देवात्मा के और कोई नहीं दे सकता। इसीलिए भगवान् देवात्मा ही ऐसे सब दुखों के हर्ता हैं और उच्च भावों को उत्पन्न और विकसित करके वह मनुष्यों को समुचित सुख प्रदान करते हैं और उनके लिए असीम बरकतों का द्वारा खोलते हैं।

इतिहास का महत्व

इतिहास को पढ़ना और परीक्षा के लिए पढ़ना साधारणत: बच्चों को रुचिकर नही लगता इसी कारण इतिहास के अध्यापक परेशान रहते हैं। परन्तु यदि हम गहराई में जाएं तो इतिहास का बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। इतिहास से ही हमें प्राचीन काल की गौरव–मय घटनाओं का ज्ञान होता है। फाह्यान सबसे पहला चीनी यात्री था जो अपने पांच साथियों समेत सम्राट–विक्रमादित्य के समय में भारत आया था। वह कई वर्ष यहां रहा और भारत में रहते हुए उसने अनेक स्थानों की यात्रा की तब उसने लिखा था कि समृद्धि की दृष्टि से भारत सोने की चिड़िया था। उस समय के लोग अहिंसा के सिद्धान्त में विश्वास रखते थे, पूर्णत: ईमानदार थे, घरों में ताले नहीं लगाए जाते थे। स्त्रियां पुरुष दोनो शिक्षित होते थे। इसी प्रकार सन् 1630 में ह्यूनसांग ने भी भारत की गौरवशाली चित्र प्रस्तुत किया था।

इतिहास के अध्ययन से हमें पता चलता है कि धीरे धीरे हमारे देश के किस प्रकार धार्मिक पाखण्ड बढ़ते गए। पुरोहितों पुजारियों ने भोली भाली जनता के धर्म के नाम पर लूटना आरम्भ किया, सती प्रथा, छूतछात, विधवा विवाह निषेध, बात विवाह आदि कुरीतियों ने हमारी समाज को जकड़ लिया। धर्म के नाम पर खून की नदियां बह गई। इतिहास से जहां हमें अपने देश के गौरव और गौरव बढ़ाने वालों का ज्ञान होता है, यहां देश को पतित करने वालों का भी ज्ञान होता है। किस किस शासक की कौन कौन सी नीतियां लाभप्रद थी और किन किन नीतियों और कमज़ोरियों ने हमारे देश को पतने के गढ़े में गिरा दिया? कैसे स्वार्थ, धन लोलुपता ने देश द्रोही पैदा किए, जिनके काले कारनामों से देश की महा हानि तो हुई, वह स्वयं भी नष्ट हो गए, उनकी नसलें ख़त्म हो गई।

इस प्रकार हम समझ सकते है कि इतिहास में भूतकाल में घटित घटनाक्रमों, विश्व विजय की महत्वाकांक्षा रखने वाले सम्राटों और उनके द्वारा मानवता की भलाई और मानव जाति को प्रभावित करने वाले युद्धों, नई नई खोजों और इसके भिन्न मानवता की तबाही की घटनाओं का समावेश होता है। इसलिए इतिहास का अध्ययन कभी मन को प्रफुल्लित करता है और कभी पीड़ा देने वाला भी होता है। इसलिए इतिहास के अध्ययन का महत्व है।

इतिहास से ही एक एक योग्य शासक, प्रबन्धक या समाज सुधारक के जीवन के तुलनात्मक अध्ययन से हम अपना सही मूल्यांकन कर सकते है, वहां इतिहास से अमूल्य प्रेरणा, शिक्षा, रोशनी और साहस प्राप्त कर सकते हैं और उससे अपने देश, समाज का और स्वयं अपना उत्थान कर सकते हैं।

जब हम गौरवशाली घटनाएं पढ़ते है तो वह हमारे लिए अनुकरणीय, प्रेरणादायक, उत्साहप्रद,

पथ – प्रदर्शक और जीवन को नया मोड़ देने वाली होती हैं। जब हम उन घटनाओं को पढ़ते हैं, जिनसे समाज और देश को हानि पहुंची है, तो वह हमारे लिए विचारणीय, शिक्षाप्रद, आंखें खोलने वाली और चौकन्ना करने वाली होती हैं। इतिहास का अध्ययन ही हमें भूतकाल की ग़ल्तियों को न दोहराने का सबक देता है। केवल पुराने गौरवमय इतिहास को पढ़कर या बताकर हम आगे नही बढ़ सकते, हमारी उन्नति का एक ही मार्ग है कि पुराने गौरव को कायम रखें और उस समय जो ग़ल्तियां हुईं है, उनको न दोहराएं और उन्हें ठीक करने का प्रयत्न करें। जो अच्छी रिवायतें रहीं हैं उनको कायम रखें और जो हानिकारक प्रथाएं धीरे – धीरे हर समाज और देश में जन्म लेती हैं, उन्हें दूर करने का प्रयत्न करें।

विश्व तो बहुत बड़ा है, देश भी बहुत बड़ा है, पर हमारी समाज जो छोटी सी ईकाई है, उसका भी गौरव – मय और सुनहरी युग रहा है। सर्वप्रथम उसका गहन अध्ययन करने की आवश्यकता है। हमारी बहुत ऊंची रिवायतें रही हैं, पूजनीय भगवान देवात्मा ने बहुत ऊंचे लक्ष्य को लेकर देव समाज की स्थाना की थी, यदि हम अपने उस सुनहरी इतिहास और रिवायतों को याद रखें, तो हम समाज का लाभकारी अंग बन सकते हैं।

हमें श्रद्धेया जी, श्रद्धेय पंडित परमेश्वर दत्त जी, श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी, भाई मोहन देव जी, श्री धर्मबल जी, भाई अमर सिंह जी, श्रद्धेय श्रीमान ईश्वर सिंह जी, श्री पी. वी. कनल जी, सरदार जमीयत सिंह जी, स्वमी गोबिन्द राम जी और ऐसे अन्य आत्मा मिले, जिन्होंने असहनीय आर्थिक संकटों के बावजूद अपने त्याग, साधना और निज की उपलब्धियों में देव समाज के इतिहास को चार चाँद लगा दिए। उनके उच्च जीवन हमारे लिए प्रेरणा के स्त्रोत बन सकते हैं, परन्तु यदि आर्थिक खुशहाली में भी हम समाज के काम को बढ़ाने में असफल रहें तो समाज के इतिहास में अपने जीवनों से काले पन्ने जोड़ रहे हैं। सुख आरामों के समानों को तो हम यह कहकर न्यायोचित बताते हैं कि पूजनीय भगवान ने अच्छे से अच्छे पदार्थों को त्यागने की शिक्षा नहीं दी, इसलिए समाज के कार्यकर्ता इन सामानों के अधिक अधिकारी हैं, परन्तु वह अधिकार पाकर हम परिणाम क्या पैदा करते हैं? जो त्याग करके श्रद्धेश श्रीमान देवत्व सिंह जी ने 20 से भी अधिक कर्मचारी पैदा कर दिए, हमने क्या पैदा किया है? केवल स्वार्थी, अयोग्य, खुशामदी और अपने पक्षधर अपनी ऐसी गतियों से समाज के इतिहास पर कालख पोत रहे हैं।

हमारी सबसे प्रथम प्रतिज्ञा और रिवायत रही है कि समाजिक स्थान या समाज के घरों में नशे का सेवन या मांसाहार नहीं होगा, हम उसमें सहायक नहीं होगें और यहां तक साहसी सेवक हुए हैं कि उन्होंने अपने दामादों को उन्होंने घर से निकाल दिया, परन्तु अपनी नशें के प्रति उच्च घृणा को कायम रखा। यदि धार्मिक स्थानों पर मोटी प्रतिज्ञाएं टूटन लगें तो निश्चय हमारी छवि करूप होगी।

हमारी समाज का इतिहास ईमानदारी के सुन्दर उदाहरणों से भरा पड़ा है। समाजिक जनों की ईमानदारी की कसमें खाई जाती थी। हमारे सामने श्रीमान मनोहर लाल जी रसोई की आग पर अपनी शेव के लिए कटोरी में जो पानी गर्म करते थे, उसके पैसे देते थे, वहां पर जब हमारी ईमानदारी शक के घेरे में आ जाए और ऊंगलियां उठाए जाने का कारण बन जाए, तो इतिहास पतन की कहानी लिखेगा।

समाज का वह सुनहरी इतिहास कहां लुप्त हो गया जहां माननीय श्रीमती सुशीला देवी जी को लगातार कुछ साल श्रेणी में उन्नत न किया गया, जबकि उनका पूरा जीवन समाज को समर्पित था और कुछ घढटे सोने खाने के ईलावा वह सेवा के कामों में रत रहती थीं। अब हम स्वयं गंभीरता से सोचें कि क्या अब श्रेणीयों में उन्नति के लिए वही कसौटी प्रयोग में आती है? या हमारे निम्न भाव ही आधार बनकर रह जाते हैं। उन्नति सदैव मैरिट को लेकर होनी चाहिए। समाज के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए समाज की आर्थिक, साहित्यिक उन्नति के लिए आत्माओं में उच्च परिवर्तन पैदा करने के लिए, समाज के लिए भवन निर्माण करने के लिए, समाजिक संस्थाओं को बनाने और उन्नत करने के लिए जिनकी जितनी उपलब्धियां और त्याग हों यदि उसके अनुसार उन्नति होगी इतिहास अवश्य विकास की करवट लेगा।

समाज में परिशोध के अद्भुत नज़ारे पैदा होते थे। विचारों के मतभेद रह सकते है और किसी संस्था की उन्नति के लिए यह आवश्यक भी हैं, परन्तु जब भी देव प्रभावदायक मण्डल में आत्मा बैठते थे तो अपनी गल्ती मानने में उन्हें कभी झिझक नहीं होती थी, अब भी अगर परिशोध के वैसे नज़ारे पैदा हों तो अपने सुनहरी इतिहास की गरिमा को बनाए रखने में सहायक होंगे।

समाज के विघट्न से पहले बड़ी कठिनाई से शिक्षा संस्थाओं को सम्भालने के लिए समाज के ही शिक्षा विभाग से सम्बन्धित जनों का एक बोर्ड गठित हुआ था, ताकि समाज के मुट्ठी भर कर्मचारी भगवान देवात्मा के प्रचार का कार्य सम्भालेंगे, और शिक्षा संस्थाओं के संचालन का अनुभव रखने वाले शिक्षा संस्थाओं को सभालेंगे, परन्तु हमारे न जाने किन निम्न भावों ने इस हितकर योजना को बनते ही मसल कर रख दिया और उसके परिणाम शिक्षा संस्थानों में आसानी से देखे जा सकते हैं।

इसके विषय में बोर्ड के विशिष्ट मैंम्बर श्री सरल सिद्धू जी ने एक ज़िम्मेवार व्यक्ति की सेवा में लिखा था : –

Unfortunately the Council in its meeting on 22nd May dissolved the Education Board and sealed off the process of cleansing the Samajic institutions, arresting the disintegrating trends, killing the image brightening intiative and dashing all hopes of progress and rejuvenation.

Posterity will always lament over this retrograde decision and will curse the day and time that fogged the thinking and led the then torch bearers to reverse their own, most sensible, timely, need based decision and step forward action. Perhaps this will go as a black day for the smajic institutions and indirectly for the Samaj too in the annals of the Dev Samaj.

हिन्दी अनुवाद : – "बदकिस्मती से कौंसल ने अपनी 22 मई की मीटिंग में शिक्षा विभाग के बोर्ड को भंग कर दिया, इससे सामाजिक शिक्षा संस्थाओं के गन्दलेपन को साफ करने के क्रम को बन्द करते हुए, संस्थाओं को छिन्न भिन्न होने से बचाने और उनमें आए गन्दलेपन को साफ करने के क्रम को बन्द करने की मोहर लगा दी। इससे समाजिक संस्थाओं की छवि को चमकाने की जो शुरुआत हुई थी, वह समाप्त हो गई और उनकी उन्नति की सब सम्भावनाओं की जो आशाएं बन्धी थी, और उनमें नई जान संचार करने की

कोशिशों पर पूर्णता पानी फेर दिया।

आने वाली नसलें सदैव इस पतन की ओर धकेलने वाले फैसले पर आठ आठ आंसु बहाएंगी और उस दिन और समय को कोसेंगीं जिसने उस के कर्णधारों की सोच को दूषित कर दिया और अपने ही बहुत बुद्धिमता पूर्ण, समयानुकूल, आवश्यकतानुसार और विकासकारी फैसले को पीछे पलट दिया। शायद यह दिन देव समाज के इतिहास में क्या सामाजिक संस्थाओं और अन्ततः देव समाज के लिए ब्लैक डे (Black Day) सिद्ध होगा।

इसका ही परिणाम हुआ कि संस्थाओं में काम करने वालों के साथ ऐसे ऐसे अन्यायपूर्ण व्यवहार हुए कि जो नैतिकता की सब सीमाएं पार कर गए।

अब हम यदि यह नहीं देख सकते कि हमने इतिहास को कैसा मोड़ दे दिया है, भावी पीढ़ी के लिए कैसे उदाहरण पेश किए है, समाज की उच्च रिवायतों को कहां लोप कर दिया है, तो हम सुधार का मार्ग नहीं अपना सकते, समाज को सुधारने से पहले अपने आपको सुधारना होगा। हम सोचें कि हमने कैसा इतिहास बनाया है, जिसको आने वाली पीढ़ियां पड़ेगी तो क्या प्रेरणा लेगी?

– सुरजीत बराड़

जीवन प्रसंग

निज हित का साधन न रखे सेवा

परोपकार जैसे शब्द इस दौर में अपना अर्थ खो चुके है। सभी को लगता है कि अब वही काम किया जाए, जिसमें अपना हित जरूर हो। अब अपने हित पर इतने केन्द्रित है कि धीरे – 2 दूसरे का अहित करने में भी नहीं चूकते। मनुष्य परोपकार व सेवा में भी अपने हित देखने लगता है। अपने हित साधने में बुराई नहीं है। सेवा निज हित का साधन बन जाए यह गलत है। आजकल रात के घन अंधकार में जुगनु शोभा पा रहे है, मानी दम्भियों का समाज आ जुटा हो। इन पंक्तियों में तुलसीदासजी कहते है कि उपकारी की फसल जानती है कि एक दिन मुझे कटना है और नए ढंग से दूसरी के काम आना है। उपकारी वृति के लोग मानते है कि हमारे परिश्रम से हम यश, धन, प्रतिष्ठता जो भी अर्जित करें वह दूसरों के काम जरूर आए, क्योंकि हर फसल अपने भीतर यह जानती है कि एक दिन मुझे कटना है और वह कटने के लिए इसलिए तैयार है कि उसके जरिये दूसरों का हित होना है। इन्हीं पक्तियों में तुलसीदास ने यह भी कहा है कि यदि रात को फसल देखें तो उसके आसपास कुछ जुगनू मंडराते है। जो पाखंड है, जो सेवा को प्रदर्शन से जोड़ते हैं, जिनके मन में अपने अहंकार की पूर्ति के लिए ही सेवा करने का भाव रहता है वो सब दंभी है। आज सेवा के क्षेंत्र में ऐसे ही लोग आ गए है, जो चमकते हैं, दिखते हैं, अपना हित साधते हैं और हट जाते है। सेवा अवश्य कीजिए लेकिन उन जुगनुओं की तरह नहीं जो आए, चमके और चले गए।

पोषण का बेहतर अवशोषण

पोषक तत्व अकेले कुछ खास कमाल नहीं दिखा पाते। इनके बेहतर अवशोषण के लिए दूसरे पोषक तत्वों का साथ ज़रूरी है

जिस प्रकार किसी परिवार को चलाने के लिए

सभी सदस्यों का एक-दूसरे के साथ तालमेल बहुत आवश्यक है, ठीक उसी प्रकार भोजन में पाए जाने वाले पोषक तत्व भी एक-दूसरे पर निर्भर रहते हैं और अकेले सही ढंग से कार्य नही कर पाते। यही नहीं, किन पोषक तत्वों का मेल किनके साथ बेहतर होगा, यह जानना भी आपके लिए बहुत जरूरी है। यहां ऐसी ही कुछ जोड़ियों के उदाहरण दिए जा रहे हैं, जिनसे आप अधिक से अधिक पोषण प्राप्त कर सकते है।

आयरन + विटामिन-सी

सभी जानते हैं कि शरीर के लिए लौह एक महत्वपूर्ण तत्व है। शाकाहारी भोज्य पदार्थों में पाया जाने वाले लौह को शरीर सही प्रकार से खून बनाने के लिए उपयोग में ला सकता है, यदि साथ में विटामिन-सी युक्त वस्तुएं जैसे, हरी मिर्च, आंवला, नींबू, संतरा आदि खाई जाएं। ऐसा न करने से शरीर लौह लवण का उपयोग सही प्रकार से नहीं कर पाता।

क्या लें - भुने चने व मुरमुरे की भेल में नींबू डालकर खाएं। लोहे की कड़ाही में बने हुए भोजन के साथ हरी चटनी या ताज़ी हरी मिर्च खाएं। खाना खाने के बाद संतरे आदि खट्टे फलों का सेवन करें।

कैल्शियम + विटामिन-डी

केवल कैल्शियम का सेवन खुद-ब-खुद कोई बड़ा फायदा नहीं कर सकता और न ही यह अपने आप जाकर हड्डियों में संरक्षित हो सकता है। इस कार्य के लिए शरीर को विटामिन-डी3 की आवश्यकता पड़ती है। विटामिन-डी हमारी त्वचा तब बनाती है, जब सूर्य की किरणें त्वचा को छूती हैं। वहीं कैल्शियम हमें दूध व दूध से निर्मित वस्तुओं, रागी, हरी भाजी आदि से मिलता है।

क्या लें -प्रतिदिन दूध/दूध से बनी चीजों का सेवन करें। साथ ही 25 से 30 मिनट सूर्य की किरणों के सीधे सम्पर्क में रहें।

एंटी ऑक्सिडेंट्स + वसा

अधिकतर सब्जियों व फलों से विटामिन प्राप्त होता है। साथ ही हमारी रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने वाले एंटी ऑक्सिडेंट्स भी मिलते हैं। जैसे पालक से ल्यूर्टिट, टमाटर से लाइकोपीन व गाजर से कैरीटीन... इसी प्रकार अन्य कई महत्वपूर्ण एंटी आंक्सिडेंट्स भी सब्जियों व फलों के सेवन से प्राप्त होते है। परंतु इन सभी को शरीर ठीक प्रकार से तभी इस्तेमाल कर पाएगा, जब इनके साथ कुछ हद तक वसा भी शामिल होगी। इसलिए वसा भी पर्याप्त मात्रा में लें।

क्या लें -मिलेजुले फलों व सब्जियों के सलाद पर कुटी डाली हुई मूंगफली या काजू-बादाम या तिल और सूर्यमुखी के बीज डालें। या फिर सलाद में थोड़ा मक्खन या खाने का तेल मिला दें। भोजन बनाने के लिए उपयोग में लाया जाने वाला तेल इन एंटी आक्सिडेट्स को अवशोषित करने में सहायक होता है।

सोडियम + पोटैशियम

इन दोनों का आपस में बहुत घनिष्ठ तालमेल है। ये दोनों पदार्थ शरीर की कोशिकाओं के अंदर और बाहर पाए जाने वाले द्रव का संतुलन बनाए रखते हैं। अधिक मात्रा में सोडियम या नमक लेने से शरीर में पानी की आवश्यकता ज्यादा महसूस होती है। इसलिए इसकी मात्रा को भी नियंत्रण में रखना बहुत महत्वपूर्ण है। वहीं पोटैशियम हमें फलों, इनके जूस व नींबू के रस से मिलता है।

क्या लें - थोड़ी मात्रा में नमक डालकर सब्जियों का सूप, थोड़ी मात्रा में नमक डालकर तैयार किया गया मीठा नींबू पानी बेहतरीन विकल्प हैं। ये चीज़ें दस्त या

उल्टियां होने पर भी अच्छा असर दिखती हैं, क्योंकि ऐसी समस्या में सोडियम व पोटैशियम शरीर से निकल जाते है।

प्रोटीन + कार्बोहाइड्रेट

प्रोटीन, वसा और कार्ब्स तीनों ही ऊर्जा प्रदान करते है। परंतु शरीर की मरम्मत और बढ़ोतरी का काम केवल प्रोटीन ही कर पाता है। यह हमें दूध, दालों और गिरियों से मिलता है। लेकिन प्रोटीन का सही फायदा लेने के लिए यह जरूरी है कि शरीर को पर्याप्त मात्रा में कार्ब्स और वसा भी मिले। इससे शरीर की ऊर्जा की आवश्यकता पूरी हो जाती है, अन्यथा प्रोटीन मरम्मत और वृद्धि का अपना काम छोड़कर पहले ऊर्जा प्रदान करने में लग जाता है।

क्या लें – दहीं – पराठा, दूध – केला, आम का शेक, डबल रोटी, खिचड़ी या दाल – चावल आदि। ध्यान रखें कि शरीर की वृद्धि और मरम्मत का काम तभी होगा, जब साथ में डबल रोटी, रोटी, चावल, आटे का कार्ब्स शामिल होंगे।

आरम्भिक दिन

पाठकगण यह जानकर प्रसन्न होंगे कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा जी के सम्बन्ध में मुबारिक पाठ विचार के साधनों का आरम्भिक दिन इस दफा 26 नवम्बर 2015 को होगा। उस दिन से गुरूमहाराज का शुभ जन्मदिन में पूरा एक महीना रह जाएगा। यह मुबारिक महीना गुरू महाराज के सम्बन्ध में विशेष साधनों का होता है। 26 नवम्बर का दिन सब सेवकों को चाव भाव से मनाना चाहिए। जहां तक सम्भव हो सब साथी सेवक एक स्थान पर एकत्र होकर भजनों का गान वा जय ध्वनि के नारे बुलन्द करें। इस दिन विशेष सभा होनी चाहिए, जिसमें सत्गुरू की शरण को पाने के सौभाग्य को अनुभव किया जाए। सम्भव हो तो प्रभात फेरी भी निकालनी चाहिए। देव जीवन के विकास का अध्ययन करना चाहिए महोत्सव के लिए अपने परिवार वा और जनों को लाने का संग्राम करना चाहिए। शुभ जन्म महोत्सव से लाभ उठाने के लिए दिलों को सरस, नम्र और श्रद्धा से भरना चाहिए। निज के साधन गुरू के रूप और उपकारों का चिन्तन हो और हर ईतवार सुबह भजनों का गान हो 29 नवम्बर 1917 को परम पूजनीय भगवान ने आरम्भिक दिन पर अपना आर्शीवाद प्रदान किया, उसका कुछ भाग इस प्रकार है : –

"यदि देवात्मा के साथ तुम्हारा अनुराग मूलक यथेष्ट सम्बन्ध स्थापन न हो इससे तुम्हारे आत्मा की क्या क्य हानि होती है। यदि धन सम्पति, मान बड़ाई, प्रशंस आदि से अन्धे बनकर तुम अपने आत्मा के मुख्य उद्देश्य को भूल जाओ वा उसके देखने के योग्य न रहा, तो तुम्हारे लिए कैसा दुर्भाग्यच का विषय है। क्य यह सच नहीं कि नेचर तुम्हारी आंखे खोलने के लि बार 2 ऐसी घटनाएं पैदा करती है कि जिनके द्वारा तु पर यहां के पदार्थो और सम्बन्धियों की असारता प्रगट करती है, और पुकार पुकार कर कहती है कि जिस धन सम्पति के पीछे तुम अन्धे बनते हो, नाम और इज्ज़त के मोह में फंस कर अन्धे बनते हो, यहां की यह सब वस्तुएं और सम्बन्धी जिनके पीछे तुम अपने आत्मा क खून करते हो, मैं एक दिन तुम से अवश्य छीन लूंगी और तुम इस मोह से अपने आत्मा का जो कुछ पतन

कर रहे हो, उसका तुम्हें महा भयानक फल दिखाकर बताऊंगी, कि तुम कितने मूर्ख और अन्धे हो। ऐसा हो कि तुम्हें देवात्मा की देव ज्योति मिले, जिसमें आत्मा ओर उसके जीवन की सत्यता प्रकाशित होती है और यह तत्व दिखाई देता है कि मनुष्य के अस्तित्व में उसका आत्मा ही एक मात्र सार पदार्थ है। और इस आत्मा का जो सच्चा और पूर्ण रक्षक और जीवन दाता है, वही मुख्य वा मूल सम्बन्धी है और उसका अनुराग सर्वांग हितकर अनुराग है। इन दिनों में इस विषय में विशेष साधनों के द्वारा जहां तक इस प्रकार के सत्य और तत्व तुम पर प्रगट हो और तुम्हारे हृदय में कोई उच्च परिवर्तन उत्पन्न हो, वहां तक तुम्हारे आत्मा का भला हो सकता है। मैं यह आर्शीवाद देता हूं कि तुम्हारा इन महायज्ञ के दिनों में ऐसे साधनों से जो कुछ और जितना शुभ सम्भव हो, वह शुभ तुम्हें प्राप्त हो दिसम्बर 24, 25,26,27 को डेराबस्सी के निकट स्थित देव आश्रम में बड़ी धूमधाम से मनाया जाएगा।

दानियों की सूची

श्रीमान ओम प्रकाश जी वर्मा (साहित)	50 हजार रूपये	श्रीमान ज्ञान चंद जी गोनिआना	1000 रूपये
श्रीमति सूरजीत बराड़	5000 रूपये	श्रीमान कुलदीप सिंह जी गोनिआना	1000 रूपये
डाक्टर नर्मता जी	5000 रूपये	श्रीमान जगजीत सिंह जी	1000 रूपये
डाक्टर विनोद चन्द जी खेड़ा	5000 रूपये	श्रीमान दुनी चंद जी राज सिंहपुर	600 रूपये
डाक्टर नवजोत सिंह जी कालड़ा	2000 रूपये	श्रीमान दीप चंद जी और साथी	802 रूपये
श्रीमान जगजीत सिंह जी	2000 रूपये	श्रीमान गुरचरण सिंह जी पदमपुर	500 रूपये
डाक्टर मुनसा सिंह जी	2000 रूपये	दुकानदार चरणजीत सैनी जी	500 रूपये
श्री जगदीष सिंह जी सेखों	2000 रूपये	श्री प्यारा सिंह जी	500 रूपये
बीबी अशोका जी	1500 रूपये	व्रिक साहिब जसवीर सिंह जीलुधियाना	500 रूपये
श्री वी. पी. सिंह जी गंगा नगर	1100 रूपये	श्री झण्डा सिंह जी करनाल	500 रूपये
श्री सीकरी जी जालन्धर	1100 रूपये	श्री सुनील दत्त जी चण्डीगढ़	500 रूपये
प्रिसिंपल दिवान जी	1000 रूपये	श्री किशन सिंह जी चौहान	500 रूपये
बीबी प्रीतम जी पटियाला	1000 रूपये	प्रिंसीपल श्रीमति सतिन्दर ढिल्लो जी	500 रूपये
श्रीमान चमन लाल जी	1000 रूपये	श्रीमान रूप सिंह जी मोड़ा	500 रूपये
श्रीमान ओम प्रकाश वर्मा जी	1000 रूपये	किताबों की सेल	1150 रूपये

सत्य धर्म बोध उत्सव

जैसे पहले पत्रिकाओं वा निमन्त्रण पत्रों द्वारा सूचित किया गया था, 19 सितम्बर से 25 सितम्बर तक डेराबसी के निकट स्थित देव आश्रम में विशेष सत्संग रखा गया। इसके लिए आश्रम के छोटे हाल को तैयार किया गया। उसको साफ सुथरा करके बिछाई आदि की। यात्रियों के ठहरने के लिए भी उचित प्रबन्ध किया गया। भोजन का भी अच्छा प्रबन्ध किया गया। श्रीमान जगदीष जी ने, रमेश जी ने इसे सारे प्रबन्ध में हमेशा की तरह पूरा योगदान दिया।

सत्संग में बहुत सारे धर्म सम्बन्धी पहले ही पहुंच गए थे। 25 सितम्बर की शाम तक मल्लेका, केसूपुरा से 8–10 जन आ गए। गंगानगर, अम्बाला, पटियाला, डेराबस्सी, चण्डीगढ़, पंचकूला, महिमा सवाई कल्याण, संगरूर, मौड़ा से एक परिवार इस अवसर पर पहुंचे। सारी हाज़री 85 के लगभग हो गई थी। सत्य धर्म बोध उत्सव की प्रवेश सभा शाम 4.30 बजे रखी गई। सभाओं का प्रोग्राम इस प्रकार था :–

प्रवेश सभा :– सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी भजन, पूजनीय भगवान का फूलों के हार से छवि द्वारा अर्चन, देव–स्तोत्र का सामूहिक गान और व्याख्या के बाद सभापति जी ने दिल के गहरे भावों से इस प्रोग्राम की सफलता के लिए सहाय प्रार्थना की, फिर एक भजन का गान हुआ।

सभापति जी ने सत्य धर्म बोध उत्सव का महत्व बताते हुए अपनी तुच्छ मान्सिक वा हार्दिक अयोग्यता का दीनता पूर्वक वर्णन किया। यह कहते हुए वह जारोकतार आंसू बहा रहे थे। फिर अपने अस्तित्व का बोध और ज्ञान प्राप्त करने की आवश्यकता को अनुभव कराया। उच्च संगत के महत्व को बताया।

हृदयगत भावों से आए हुए यात्रियों का खड़े होकर स्वागत किया। उच्च संगत में आए शानदार परिवर्तनों का श्रद्धा भाव से वर्णन किया।

उन्होंने बताया कि इस उत्सव के उच्च वातावरण द्वारा हम नया ज्ञान वा नई प्रेरणाएं और उच्च संकल्प लेकर जाएंगे। फिर कुछ नियमों का वर्णन किया, जिन्हें पालन करके हम इन सभाओं से लाभ उठा सकते हैं, जिसमें सब प्रकार की निन्दा से बचें और सेवा करने का यत्न करें, इसके साथ जय ध्वनि करके इस सभा की समाप्ति हुई

26.9.2015 इस सभा का विषय :– "आत्मिक अबोधता की हानियां और आत्म बोध के लाभ" सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने फरमाया कि आत्म बोध से पहले शरीर के अंगों और उनके कारज का बोध होना जरूरी है। फिर आत्मा क्या है? मेरा आत्मा कैसे बनता और बिगड़ता है? जुल्म, अत्याचार के द्वारा आत्मा की हानि होती हैं। शरीर से भी बढ़कर आत्मा की हानि और लाभ का बोध आवश्यक है। यह बोध सबसे कीमती है। आत्मा किन चिन्ताओं और क्रियाओं से दुर्बल होता है, कैसे कठोर होता है, अन्धा होता है? यह क्रम चलता रहे तो आत्मा का नाश हो जाता है। आत्मा के परिवर्तन का बोध ही आत्मा का बोध है। परिवर्तन हमारी भाव शक्तियों के द्वारा होता है। इन शक्तियों को जानना ही आत्मा को जानना है। आत्मा के रोगी होने और उसके ईलाज का बोध आत्म बोध है। इसकी हानियों का वर्णन किया कि हानिकारक शक्तियों द्वारा ही बलात्कार, बेईमानी, जेल, मौतें, आत्मघात होते हैं। यदि अपने भीतर की नीच शक्ति को देखकर दुख, घृणा वा गिलानी पैदा होती है तो नीच गति का बोध है। गुस्सा और स्वार्थ इतना गंभीर रोग है, जो मनुष्य का कब्र तक पीछा नहीं छोड़ता। आत्म बोध अहं बोध के बिना आरम्भ नहीं होता। यह सभा भाव और ज्ञान वर्द्धक थी।

26.09.2015 – सुबह 11 बजे :– सभापति

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी। इस सभा में उन्होंने पूजनीय देवशास्त्र खण्ड 4 के महत्व का वर्णन किया। हम अपने व्यवहारों को इस शास्त्र द्वारा देख सकते हैं। हम कैसे माता – पिता कैसे भाई बहन, कैसे पति पत्नी और अन्य सम्बन्धों में हमारे व्यवहार कैसे हैं, उन्हें देख सकते हैं। यह पावन आदेश देव ज्योति से भरपूर है। सभापति जी ने आत्मा के विषय में आवश्यक बोध, आत्मा के शरीर के साथ सम्बन्ध, मनुष्य के मुख्य लक्ष्य आदि के सम्बन्ध में पवित्र आदेशों का पाठ किया। उनका सारा ब्यान बहुत जोश से भरा हुआ था।

26.09.2015 शाम 4.30 बजे :– सभापति श्रीमान विनोद जी खेड़ा। उन्होंने बताया कि मुझे यह बहुत गहराई से अनुभव हो रहा है कि मैंने अपने जीवन के 70 वर्षो को सफल नही किया, अधिकतर बर्बाद ही किया है। इस सभा का विषय है "भगवान के आद्वितीय देव प्रभावों का आद्वितीय कारज अद्वितीय इसलिए है कि उनके प्रभाव आद्वितीय हैं। सभापति जी ने उच्च परलोक वासी श्रीमान निर्मल सिंह जी के जीवन पर जो कारज हुआ, उसका वर्णन किया। अपनी श्रद्धेय दादी जी के इन देव प्रभावों ने मिथ्या, मांसाहार, लड़ाई झगड़े छुड़ा दिए। अपने परिवार के परिवर्तन की सुन्दर झलक उन्होंने पेश की।

फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने जीवनों को उच्च वा सेवाकारी बनाने के अद्वितीय कारज का बहुत भावपर्ण शब्दों में वर्णन किया। उन्होंने श्रीमान गोपीचन्द जी, डाक्टर इकबाल सिंह जी, सरदार अनोख सिंह साधु जानकीदास जी, निर्भया नन्द जी, सवित्री जी सिद्धू, श्रीमान गजेन्द्र सिंह जी चहल के एक सम्बन्धी, एक फौजी, फरलिया जी, गंगानगर के भाटिया साहिब, श्रीमान जीवन बल की द्वारा एक बेवफा के परिवर्तन का जिकर किया। यह परिवर्तन बताते हुए श्रीमान जी, का दिल भरा हुआ था और वह गुरू के आगे झुक रहे थे। उन्होंने अपने प्रभावशाली ब्यान से देव प्रभावों के अद्वितीय कारज को हाजरीन के दिलों पर बड़ी खूबसूरती से अंकित किया। इस सभा में हाज़री 100 के लगभग थी?

27.09.2015 सुबह 9.00 बजे :– सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी विषय "पूजनीय भगवान का नीच जीवन मिटाने, और उच्च जीवन पैदा करने का लासानी कारज।" पूजनीय भगवान की छवि द्वारा अर्चन, देव स्तोत्र का गान और व्याख्या, उसके बाद सभापति जी ने आर्शीवाद प्रार्थना की।

उसके बाद सभापति जी ने भृष्टाचार, बलात्कार, नशे, मांसाहार आदि का ज़िकर करते हुए नीच जीवन की मोटी तस्वीर पेश की। धन अनुराग, स्वार्थ, मोह बन्धन, आलस्य, प्रशंसा, घमंड, घृणा का जीवन घोर नीच जीवन है। प्रचलित धर्ममत नीच जीवन का हल परमात्मा की अराधना में बताते हैं। पाठ, जाप पर ज़ोर दिया जाता है। परन्तु नीच जीवन से जो दुख और सन्ताप पैदा होते हैं, उसकी भयानक तस्वीर भगवान देवात्मा की ज्योति में दिखाई देती है। वह अपना बल पहुंचाकर उससे सच्ची मुक्ति प्रदान करते हैं। देवात्मा की कृपा से जिन वर्तमान जनों वा इससे पहले सैंकडों जनों को जो मुक्ति मिली उनके उदाहरण प्रस्तुत किए। उन्होंने श्रद्धा भाव से भरकर ब्यान किया कि देवात्मा की ज्योति की झलक में उच्च भाव का सुन्दर रूप दिखाई देता है। उन्होंने पापियों को, चरित्र हीनों को, कृपापात्र पापों में डूबते हुए मनुष्यों को बचाया है। ऐसे उच्च जीवन धारी जन पैदा किए हैं जिनके द्वारा नये युग का आरम्भ किया है। यह सभा दिलों को गहराई से प्रभावित करने वाली थी।

10.30 बजे :– यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई इस सभा में भगवान देवात्मा के मिशन के लिए धन और जन की अपील की। और धर्मों का लक्ष्य

नीच जीवन मिटाने का नहीं। अपितु बड़ी 2 हस्तियां अपनी कमज़ोरियों का शिकार हो जाती हैं, ऐसी घटनाएं पेश की गई। फिर उन्होंने बताया कि महान मिशन महान कुर्बानियां मांगता हैं।

मैं 66 वर्ष से समाज में अपनी योग्यता अनुसार जिम्मेवारी निभा रहा हूं और अपने भले का संग्राम कर रहा हूं। फिर धन की अपील की गई, जिसकी लिस्ट आगे दी जाएगी।

भाव प्रकाश

पहले नशे छोड़ने की अपील की। एक गंगानगर से नौजवान अशोक कुमार जी ने बीड़ी छोड़ने का प्रण किया।

एक और नौजवान ने कुछ समय के लिए शराब छोड़ने के लिए कहा। श्री V.P. सिंह जी ने पदमपुर से पोस्त, रजनी गन्धा, पान, सुपारी सब से मुक्त होने का प्रण किया और कहा कि 1–2 वर्ष में मैं मिशन में पूर्ण समर्पित हो जाऊंगा।

श्रीमान सुनील दत्त जी : सभाएं पहले भी बहुत सुनी हैं, पर अपनी नीचता इस बार ही नज़र आई है। मैं विधवा मां के पैसों से चोरी कर लेता था। पहली धर्म पत्नी के सम्बन्ध में भी गल्तियां नज़र आई है। वर्तमान पत्नी के सम्बन्ध में गल्तियां करता हूं। मैंने हाथ उठाने की गल्तियां भी की है। उनसे क्षमा चाहता हूं (ब्यान करते हुए वह जारोकतार रो रहे थे)

श्री शौर्या जी :– मैं स्कूल में पढ़ा रहा हूं। मैं घमंड से भरा रहता हूं। मैं अहंकार का रोगी हूं। मैं अपने सीनियर के साथ काम करते हुए उनका बिल्कुल सन्मान नहीं करता, उल्टा अपमान करता हूं। मैं आगे से इस बात के लिए बहुत सतर्क रहूंगा।

श्रीमान सुखदेव सिंह जी :– एक जन को महोत्सव पर भजन तैयार करने की अपील की। मैं लेट पहुंचा हूं, इसकी क्षमा मांगता हूं। बहुत Wonderfull सभाएं हुई है। उपकारी नज़र आए है। मैं यूनिवर्सिटी लन्दन में एक उपकारी के पास नौकरी करता था। मैंने कहा कि मांसाहारी भोजन मैं सहन नहीं कर सकता, Toilet तो साफ कर सकता हूं। मेरी नौकरी पक्की हो गई, उन्होंने कमरा भी दिया, उनका पैर खराब हो गया, उन्होंने अपने बेटे के स्थान पर मुझे मौका दिया। मैं उस महान उपकारी के उपकारों को नही भूल सकता। गुरू महाराज के तीन बड़े उपकार नज़र आते हैं, (1) उनका देव जीवन (2) उनके पूजनीय ग्रन्थ (3) उनकी धर्म शिक्षा। मुझे दुख हो रहा है कि मेरे भाई ने बहुत जानवर कतल किए हैं, इसका कोई परिशोध नहीं हो सकता। मुझे मेरी अन्दर की शक्तियों से डर है। मैं मनमुखता का रोगी हूं। जिसका Credit मुझे मिलता है, वह किसी और की मेहरबानी हैं। यदि मुझे यह संगत न मिली होती, मैं लन्दन में रोटी भी नहीं कमा सकता था। मेरा शरीर मेरी माता का दान है, पर कोई कदर नहीं। गुरू की शिक्षा अनुपम है, इससे ऊपर कोई धर्म की शिक्षा नहीं। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी से किसी का मुकाबला करना महा पाप है। नेक बनने से बढ़कर कोई अमीरी नहीं।

श्री हुशियार सिंह जी :– मैंने नशे किए हैं, पशु वध किया और कराया है। मैं इस संगत से दूर होता गया और हानि उठाता रहा। 1100 रूपये लेकर पुच्छें देता था। मैं जिन्दगी में फेल हूं। बुराई की कोई सीमा नही होती। मैं क्या क्या कर गया, क्या बताऊं। सारी मिथ्या देवी देवताओं की फोटो निकालकर नया जीवन शुरु करूंगा।

श्रीमति भजन कौर जी :– हुशियार को हाथ बांधकर प्रार्थना करती रही, दो दो सिगरटें इक्टठी लगाकर पीता रहा है। मैं बहुत शर्मसार हूं। इसका भला हो सके।

श्रीमान झंडा सिंह जी :– वह अपने मामा जी के चरणों में गिर गए और ज़ोर ज़ोर से रोने लगे। मैं आप लोगों के सामने मामा जी की कृपा से खड़ा हूं। गांव में

Regd. Postal No.CHD (0077) 2015-17
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

जाकर और फिर फौज में जाकर मेरी बहुत बर्बादी हुई। मेरे भाई संसार से चले गए। मेरी आत्मा बहुत कमज़ोर हैं। इस वातावरण में दिल के रोगों की और ध्यान गया है। शरीर सम्बन्धी नीच अनुरागों का दास हूं। काश! मैं नियमित निज का साधन कर सकूं।

श्रीमान किशन सिंह जी चौहान :- मुझे मेरे महा सौभाग्य महसूस होते हैं कि मैं 48 वर्ष से सेवक हूं। जो मेरा भला हुआ है, उसका ब्यान नहीं हो सकता। श्रीमान जी के मुझ पर बहुत उपकार हैं। श्रीमान जी कठिनाईयों में से गुजर कर भी हमारा और अपना भला कर रहे हैं।

महिन्द्र सेखड़ी :- श्रीमान जी, मैं पहली बार गुरचरण सिंह जी के कहने पर यहां आया हूं। यहां जो ज्ञान की गंगा बही, उसमें मैंने डुबकियां लगाई। मैं अपने आपको बहुत भाग्यशाली समझता हूं उच्च आत्माओं के साथ रहकर गुरूदेव जी के विषय में काफी जानकारी मिली। मैं आप सभी का बहुत आभारी हूं। आप लोगों ने मुझे Adjust किया और बहुत प्यार दिया।

कुछ मजबूरी में मैं प्रोग्राम बीच में छोड़कर जा रहा हूं 1100 रूपये अपनी पैन्शन से भेंट कर रहा हूं। यदि अगले प्रोग्राम के बारे में मुझे पता दे सकें तो मैं सह परिवार आऊंगा। आप सब को धन्यवाद देता हूं।

अशोका जी :- यहां पर जो देव प्रभावों की वर्षा होती रही, उससे बहुत लाभ हुआ। मुझे यह बात गहराई से समझ आई कि यदि अपने सुखों को मुख्य रखते हैं, तो कभी उच्च जीवन नहीं पा सकते। स्वार्थ दिखाई तो देता है, निकलने का संग्राम भी करती हूं। यहां मुझे अपनी खराबी का असल बोध करवा दिया।

दूसरी बात यह कि दूसरों की कमियां देखने से श्रद्धा घटती है। मैं समझती थी कि मैं तो सच्ची बात कह रही हूं। यह अन्यायकारी बात है, इसलिए सत्संग में जाकर भी आत्मिक हानि उठा लेती । मुझे लगता है कि मरने पर मेरे पीछे कोई इन्सान नहीं जाएगा, क्योंकि कोई इन्सान नहीं है जिसके साथ मैं टकराई नहीं। उपकारियों को भी नहीं छोड़ा भगवान का बल पाकर संकल्प लेती हूं कि अपनी कमज़ोरियों को घटाने का संग्राम करूंगी। कर्मचारियों का धन्यवाद है, जो अपनी सेहत की परवाह किए बिना हमारे भले का संग्राम करते रहे।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री-देव-धर्म-मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts